Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

सिख धर्म: खालसा पंथ और गुरू गोबिन्द सिंह जी के विचार

डॉ. गीता सिंह[1]
प्रोफेसर (इतिहास)
मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
Email:- geet.raj.mudit@gmail.com
अंजू रानी[2]
शोधार्थी (पीएच.डी. इतिहास)
मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

भूमिका:- सिख धर्म का इतिहास प्रथम सिख गुरु, गुरु नानक के द्वारा पन्द्रहवीं सदी में दक्षिण एशिया के पंजाब क्षेत्र में आगाज हुआ। इसकी धार्मिक परम्पराओं को गुरु गोबिन्द सिंह ने 30 मार्च 1699 के दिन अंतिम रूप दिया। विभिन्न जातियों के लोग ने सिख गुरुओं से दीक्षा ग्रहणकर खालसा पन्थ को सजाया। पाँच प्यारों ने फिर गुरु गोबिन्द सिंह को अमृत देकर खालसे में शामिल कर लिया। इस ऐतिहासिक घटना ने सिख धर्म के तकरीबन 300 साल इतिहास को तरतीब किया। सिख धर्म का इतिहास, पंजाब का इतिहास और दक्षिण एशिया (मौजूदा पाकिस्तान और भारत) के 16वीं सदी के सामाजिक-राजनैतिक महौल से बहुत मिलता-जुलता है।

दक्षिण एशिया पर मुगलिया सल्तनत के दौरान (1556-1707), लोगों के मानवाधिकार की हिफाज़ात हेतु सिखों के संघर्ष उस समय की हकूमत से थी, इस कारण से सिख गुरुओं ने मुस्लिम मुगलों के हाथो बलिदान दिया। इस क्रम के दौरान, मुगलों के खलिाफ़ सिखों का फ़ौजीकरण हुआ। सिख मिसलों के अधीन सिख राज स्थापित हुआ और महाराजा रणजीत सिंह के हकूमत के अधीन सिख साम्राज्य, जो एक ताकतवर साम्राज्य होने के बावजूद इसाइयों, मुसलमानों और हिन्दुओं के लिए धार्मिक तौर पर सहनशील और धर्म निरपेक्ष था। आम तौर पर सिख साम्राज्य की स्थापना सिख धर्म के राजनैतिक तल का शिखर माना जाता है, इस समय पर ही सिख साम्राज्य में कश्मीर, लद्दाख और पेशावर शामिल हुए थे।

हरी सिंह नलवा, खालसा फ़ौज का मुख्य जनरल था जिसने खालसा पन्थ का नेतृत्व करते हुए खैबर पखुतूनख्वा से पार दर्द-ए-खैबर पर फ़तह हासिल करके सिख साम्राज्य की सरहद का विस्तार किया। धर्म

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

निरपेक्ष सिख साम्राज्य के प्रबन्ध के दौरान फौजी, आर्थिक और सरकारी सुधार हुए थे। 1947 में पंजाब का बँटवारा की तरफ बढ़ रहे महीनों के दौरान, पंजाब में सिखों और मुसलमानों के दरम्यान तनाव वाला माहौल था, जिसने पश्चिम पंजाब के सिखों और हिन्दुओं और दूसरी ओर पूर्व पंजाब के मुसलमानों का प्रवास संघर्षमय बनाया।

खालसा:-

खालसा सिख धर्म के विधिवत् दीक्षा प्राप्त अनुयायियों सामूहिक रूप है। खालसा पंथ की स्थापना गुरु गोबिन्द सिंह जी ने 1699 को बैसाखी वाले दिन आनंदपुर साहिब में की। इस दिन उन्होंने सर्वप्रथम पाँच प्यारों को अमृतपान करवा कर खालसा बनाया तथा तत्पश्चात् उन पाँच प्यारों के हाथों से स्वयं भी अमृतपान किया। सतगुरु गोबिन्द सिंह ने खालसा महिमा में खालसा को काल पुरख की फ़ौज पद से नवाजा है।

तलवार और केश तो पहले ही सिखों के पास थे, गुरु गोबिन्द सिंह ने खंडे बाटे की पाहुल तैयार कर कछा, कड़ा और कंघा भी दिया। इसी दिन खालसे के नाम के पीछे सिंह लग गया। शारीरिक देख में खालसे की भिन्ता नजर आने लगी। पर खालसे ने आत्म ज्ञान नहीं छोड़ा, उस का प्रचार चलता रहा और आवश्यकता पड़ने पर तलवार भी चलती रही।

पूर्व इतिहास:-

खालसा के आरम्भिक दिनों के अकाली सिख वीर सिख धर्म के ऊपर अन्य धर्मों और सरकारी नुमाइन्दों के वार लगातार बढ़ गए थे। सरकार को गलत खबरें देकर इस्लाम के कट्टर अनुयायियों ने गुरु अर्जुन देव जी को मौत की सजा दिलवा दी। जब गुरु अर्जुन देव, को बहुत दु:ख दे कर शहीद कर दिया गया तो गुरु हरगोबिन्द जी ने तलवार उठा ली। यह तलवार सिर्फ आत्म रक्षा और आम जनता की बेहतरी के लिए उठाई थी।

गुरु हरगोबिन्द जी के जीवन में उन पर लगातार 4 हमले हुए और सतगुरु हरि राए पर भी एक हमला हुआ। गुरु हरि कृष्ण को भी बादशाह औरंगजेब ने अपना अनुयायी बनाने की कोशिश की।

गुरु तेग बहादुर को सरकार ने मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि वो हिन्दू ब्राह्मणों के दुखों को देख कर सरकार से अपील करने गए थे। उसके बाद सरकारी अहलकारों ने गुरमत के बढते प्रचार व अनुयायियों की भारी संख्या को अपने धर्म के लिए खतरा समझना शुरु कर दिया और वो इसके विरुद्ध एकजुट हो गए। इस बीच गुरु गोबिन्द सिंह ने कुछ बानियों की रचना की जिस में इस्लाम के खिलाफ सख्त टिप्पणियां थी।

उपरोक्त परिस्थितयों तथा औरंगजेब और उसके नुमाइंदों के गैर-मुस्लिम जनता के प्रति अत्याचारी व्यवहार को देखते हुए धर्म की रक्षा हेतु जब गुरु गोबिन्द सिंह ने सशस्त्र संघर्ष का निर्णय लिया तो उन्होंने ऐसे सिखों (शिष्यों) की तलाश की जो गुरमत विचारधारा को आगे बढाएं, दुखियों की मदद करें और ज़रुरत पढ़ने पर अपना बलिदान देने में भी पीछे ना हटें।

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

जब कोई धर्म आगे बढ़ता है तो उसके बहुत आम दिखता है कि उसके अनुयायी बहुत हैं, ज्यादातर तो देखा-देखी हो जाते हैं, कुछ श्रद्धा में हो जाते हैं, कुछ अपने खुदगर्जी के कारण हो जाते हैं, असल अनुयायी तो होते ही गिने चुने हैं। इस बात का प्रमाण आनंदपुर में मिला। उस समय सिख धर्म के गुरु गोबिन्द सिंह ने बैसाखी पर्व पर आनन्दपुर साहिब के विशाल मैदान में सिख समुदाय को आमंत्रित किया।

जहां गुरुजी के लिए एक तख्त बिछाया गया और तख्त के पीछे एक तम्बू लगाया गया। उस समय गुरु गोबिन्द सिंह के दायें हाथ में नंगी तलवार चमक रही थी। गोबिन्द सिंह नंगी तलवार लिए मंच पर पहुंचे और उन्होंने ऐलान किया- मुझे एक आदमी का सिर चाहिए। क्या आप में से कोई अपना सिर दे सकता है? यह सुनते ही वहां मौजूद सभी सिख आश्चर्यचकित रह गए और सन्नाटा छा गया। सब हक्के बक्के रह गए। कुछ तो मौके से ही खिसक गए।

कुछ कहने लग पड़े गुरु पागल हो गया है। कुछ तमाशा देखने आए थे। कुछ माता गुजरी के पास भाग गए की देखो तुम्हारा सपुत्र क्या खिचड़ी पका रहा है। उसी समय दयासिंह (अथवा दयाराम) नामक एक व्यक्ति आगे आया जो लाहौर निवासी था और बोलाआप मेरा सिर ले सकते हैं। गुरुदेव उसे पास ही बनाए गए तम्बू में ले गए। कुछ देर बाद तम्बू से खून की धारा निकलती दिखाई दी। तंबू से निकलते खून को देखकर पंडाल में सन्नाटा छा गया। गुरु गोबिन्द सिंह तंबू से बाहर आए, नंगी तलवार से ताजा खून टपक रहा था।

उन्होंने फिर ऐलान किया- मुझे एक और सिर चाहिए। मेरी तलवार अभी प्यासी है। इस बार धर्मदास (उर्फ धरम सिंह) आगे आये जो सहारनपुर के जवाडा गांव के निवासी थे। गुरुदेव उन्हें भी तम्बू में ले गए और पहले की तरह इस बार भी थोड़ी देर में खून की धारा बाहर निकलने लगी। बाहर आकर गोबिन्द सिंह ने अपनी तलवार की प्यास बुझाने के लिए एक और व्यक्ति के सिर की मांग की। इस बार जगन्नाथ पुरी के हिम्मत राय (उर्फ हिम्मत सिंह) खड़े हुए। गुरुजी उन्हें भी तम्बू में ले गए और फिर से तम्बू से खून धारा बाहर आने लगी।

गुरुदेव पुनः बाहर आए और एक और सिर की मांग की तब द्वारका के युवक मोहकम चन्द (उर्फ मोहकम सिंह) आगे आए। इसी तरह पांचवी बार फिर गुरुदेव द्वारा सिर मांगने पर बीदर निवासी साहिब चन्द सिर देने के लिए आगे आये। मैदान में इतने सिक्खों के होने के बाद भी वहां सन्नाटा पसर गया, सभी एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। तभी तम्बू से गुरु गोबिन्द सिंह केसरिया बाना पहने पांच सिक्ख नौजवानों के साथ बाहर आए। पांचों नौजवान वहीं थे जिनके सिर काटने के लिए गोबिन्द सिंह तम्बू में ले गए थे।

गुरुदेव और पांचों नौजवान मंच पर आए, गुरुदेव तख्त पर बैठ गए। पांचों नौजवानों ने कहां गुरुदेव हमारे सिर काटने के लिए हमें तम्बू में नहीं ले गए थे बल्कि वह हमारी परीक्षा थी। तब गुरुदेव ने वहां उपस्थित सिक्खों से कहा आज से ये पांचों मेरे पंज प्यारे हैं। इस तरह सिक्ख धर्म को पंजप्यारे मिल गए। जोन्होंने बाद में अपनी निष्ठा और समर्पण भाव से खालसा पंथ का जन्म दिया।

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

खंडे बाटे की पाहुल:-

खंडा बाटा, जंत्र मंत्र और तंत्र के मेल से बना है। इसको पहली बार सतगुर गोबिन्द सिंह ने बनाया था।

- **जंत्र:** बाटा (बर्तन) और दो धारी खंडा
- **मंत्र:** 5 बानियाँ - जपु साहिब, जाप साहिब, त्व प्रसाद सवैये, चोपाई साहिब, आनंद साहिब
- **तंत्र:** मीठे पतासे डालना, बानियों को पढ़ा जाना और खंडे को बाटे में घुमाना

इस विधि से हुआ तयार जल को पाहुल कहते हैं। आम भाषा में इसे लोग अमृत भी कहते हैं। इसको पीकर सिख, खालसा फ़ौजका हिस्सा बन जाता है अर्थात् अब उसने तन मन धन सब परमेश्वर को सौंप दिया है, अब वो सिर्फ सच का प्रचार करेगा और जरूरत पढ़ने पर वो अपना गला कटाने से पीछे नहीं हटेगा। सब विकारों से दूर रहेगा। ऐसे सिख को अमृतधारी भी कहा जाता है। यह पाहुल पाँचों को पिलाई गई और उन्हें पांच प्यारों के खिताब से नवाजा।

2 कक्कर तो सिख धर्म में पहले से ही थे। जहाँ सिख आत्मिक सत्ल पर सब से भीं समझ रखता था सतगुर गोबिन्द सिंह जी ने उन दो ककारों के साथ साथ कंघा, कड़ा और कछा देकर शारीरिक देख में भी खालसे को भिन्न कर दिया। आज खंडे बाटे की पाहुल पांच प्यारे ही तयार करते हैं। यह प्रक्रिया आज रिवाज बन गयी है। आज वैसी परीक्षा नहीं ली जाती जैसी उस समय ली गई थी। इस प्रिक्रिया को अमृत संचार भी कहा जाता है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि गुरु गोबिन्द सिंह जी भी पांच प्यारों के आधीन चला करते थे और उनके हुक्म को माना करते थे। पांच प्यारों ने गोबिन्द सिंह को चमकोर का किला छोड़ने का हुक्म दिया और उन्हें मानना पड़ा। पांच प्यारों ने फिर गोबिन्द सिंह जी को टोका, जब गोबिन्द सिंह इन की परख के लिए दादू की कब्र पर नमस्कार कर रहे थे। गोबिन्द सिंह ने बंदा बहादुर को भी पांच प्यारों के संग भेजा गया, इतिहास में ज़िक्र है कि जब बंदा बहादुर प्यारों की उलंघना करता रहा तो बंदा बहादुर को सब किले में छोड़ गए।

गोबिन्द सिंह और खालसा फौज ने बहादुर शाह की मदद की और उसे शासक बनाने के लिए उसके भाई से लोहा भी लिया। खालसा ने ही गुरु गोबिन्द सिंह की बानियों को खोजा और ग्रन्थ के रूप में ढाला। इधर 27 दिसम्बर सन् 1704 को दोनों छोटे साहिबजादे और जोरावतसिंह व फतेह सिंह जी को दीवारों में चुनवा दिया गया। जब यह हाल गुरुजी को पता चला तो उन्होंने औरंगजेब को एक जफरनामा (विजय की चिट्ठी) लिखा, जिसमें उन्होंने औरगंजेब को चेतावनी दी कि तेरा साम्राज्य नष्ट करने के लिए खालसा पंथ तैयार हो गया है।

8 मई 1705 में मुक्तसर में मुगलों से भयानक युद्ध हुआ, जिसमें गुरु जी की जीत हुई। अक्टूबर 1706 में गुरु जी दक्षिण में गए जहाँ पर उनको औरंगजेब की मृत्यु का पता चला। औरंगजेब ने मरते समय एक शिकायत पत्र लिखा था। हैरानी की बात है कि जो सब कुछ लुटा चुका था, (गुरुजी) वो फतहनामा लिख रहे थे व जिसके पास सब कुछ था वह शिकस्त नामा लिख रहा है। इसका कारण था सच्चाई । गुरुजी ने युद्ध सदैव अत्याचार के विरुद्ध किए थे न कि अपने निजी लाभ के लिए।

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

औरंगजेब की मृत्यु के बाद गुरु गोबिन्द सिंह जी ने बहादुरशाह को बादशाह बनाने में मदद की। गुरुजी व बहादुरशाह के संबंध अत्यंत मधुर थे। इन संबंधों को देखकर सरहद का नवाब वजीत खाँ घबरा गया। अत: उसने दो पठान गुरुजी के पीछे लगा दिए। इन पठानों ने गुरुजी पर धोखे से घातक वार किया, जिससे 7 अक्टूबर 1708 में गुरु गोबिन्द सिंह जी नांदेड साहिब में दिव्य ज्योति में लीन हो गए। अंत समय आपने सिक्खों को गुरु ग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानने को कहा व खुद भी माथा टेका।

गुरुजी के बाद माधोदास ने, जिसे गुरुजी ने सिक्ख बनाया बंदा सिंह बहादुर नाम दिया था, सरहद पर आक्रमण किया और अत्याचारियों की ईंट से ईंट बजा दी। | गुरु गोविंदजी के बारे में लाला दौलतराय, जो कि कट्टर आर्य समाजी थे, लिखते हैं मैं चाहता तो स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, परमहंस आदि के बारे में काफी कुछ लिख सकता था, परंतु मैं उनके बारे में नहीं लिख सकता जो कि पूर्ण पुरुष नहीं हैं।

मुझे पूर्ण पुरुष के सभी गुण गुरु गोविंदसिंह में मिलते हैं। अतः लाला दौलतराय ने गुरु गोविंद सिंह जी के बारे में पूर्ण पुरुष नामक एक अच्छी पुस्तक लिखी है। इसी प्रकार मुहम्मद अब्दुल लतीफ भी लिखता है कि जब मैं गुरु गोबिन्द सिंह जी के व्यक्तित्व के बारे में सोचता हूँ तो मुझे समझ में नहीं आता कि उनके किस पहलू का वर्णन करूं। वे कभी मुझे महाधिराज नजर आते हैं, कभी महादानी, कभी फकीर नजर आते हैं, कभी वे गुरु नजर आते हैं।

गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वार रचित रचनायें:-

दशम ग्रन्थ की पाण्डुलिपि का प्रथम पत्र। दशम ग्रन्थ में प्राचीन भारत की सन्त-सैनिक परम्परा की कथाएँ हैं ।

- **जाप साहिब:** एक निरंकार के गुणवाचक नामों का संकलन
- **अकाल उस्तत:** अकाल पुरख की अस्तुति एवं कर्म काण्ड पर भारी चोट
- **बचित्र नाटक:** गोबिन्द सिंह की सवाई जीवनी और आत्मिक वंशावली से वर्णित रचना

चण्डी चरित्र - 4 रचनाएँ - अरूप-आदि शक्ति चंडी की स्तुति । इसमें चंडी को शरीर औरत एवंम मूर्ती में मानी जाने वाली मान्यताओं को तोड़ा है। चंडी को परमेशर की शक्ति = हुक्म के रूप में दर्शाया है। एक रचना मार्कण्डेय पुराण पर आधारित है।

- **शास्त्र नाम माला:** अस्त्र-शस्त्रों के रूप में गुरमत का वर्णन।
- **अथ पख्याँ चरित्र लिख्यते:** बुद्धिओं के चाल चलन के ऊपर विभिन्न कहानियों का संग्रह।
- **ज़फ़रनामा:** मुगल शासक औरंगजेब के नाम पत्र।
- **खालसा महिमा:** खालसा की परिभाषा और खालसा के कृतित्व।

चण्डी चरित्र :-

चण्डी चरित्र सिक्खो के दसवं गुरू गोबिन्द जी द्धारा रचित देवी चण्डिका की एक स्तुति है । गुरू गोविन्द सिंह एक महान योद्धा एवं भक्त थे । वे देवी के शक्ति रूप के उपासक थे । यह स्तुति

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

दशम ग्रन्थ के उक्ति बिलास नामक विभाग का एक हिस्सा है। गुरुबाणी मे हिन्दू देवी - देवताओ का अन्य जगह भी वर्णन आता है

चण्डी के अतिरिक्त शिवा शब्द की व्याख्या ईश्वर के रूप में भी की जाती है। महाकोश नामक किताब मे शिवा की व्याख्या (परब्रहा की शक्ति) के रूप में की गई है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार भी शिवा , शिव (ईश्वर) की शक्ति है। देवी के रूप का व्याख्यान गुरु गोबिन्द सिंह जी यूं करते हैं -

पवित्री पुनिता पुराणी परेयं"
प्रभी पूरणी पारब्रहमी अजेयं " "
अरूपं अनूपं अनामं अठामं " "
अमीतं अजीतं महां धरम धायं 1132 11251"

जफरनामा:-

जफरनामा अर्थात विजय पत्र गुरु गोबिन्द सिंह द्धारा मुग़ल शासक औरंगजेब को लिखा गया था। जफरनामा, दशम ग्रन्थ का एक भाग है और इसकी भाषा फारसी है। भारत के गौरवमयी इतिहास मे दो पत्र विश्वविख्यात हुए। पहला पत्र छत्रपति शिवाजी द्धारा राजा जयसिंह को लिखा गया था तथा दूसरा पत्र गुरु गोबिन्द सिंह द्धारा शासक औरंगजेब को लिखा गया जिसे जफरनामा अर्थात विजय पत्र कहते है। नि:संदेह गुरु गोबिन्द सिंह का यह पत्र आध्यात्मिकता, कूटनीति तथा शौर्य की अद्धभुत त्रिवेणी है।

गुरु गोबिन्द सिंह जहां विश्व की बलिदानी परम्परा मे अद्वितीय थे वहीँ वे स्वयं एक महान लेखक, मौलिक चिंतक तथा कई भाषाओ के ज्ञाता भी थे, उन्होंने स्वयं कई ग्रंथो की रचना की। वे विद्धानों के संरक्षक थे। उनके दरबार में छद्द कवियों तथा लेखकों की उपस्थिति रहती थी इसलिए उन्हें संत सिपाही भी कहा जाता था। वे भक्ति तथा शक्ति के अद्वितीय प्रतीक थे।

अपने पिता गुरु तेग बहादुर और अपने चारों पुत्रों के बलिदान के पश्चात 1706 ई० में खिदराना की लड़ाई के पश्चात गुरु गोबिन्द सिंह ने भाई दया सिंह को एक पत्र देकर सम्राट औरंगजेब के पास भेजा। उन दिनों औरंगजेब दक्षिण भारत के अहमदनगर में अपने जीवन की अंतिम सांसे गिन रहा था भाई दया सिंह दिल्ली, आगरा होते हुए लम्बा मार्ग तय करके अहमदनगर पहुंचे। औरंगजेब ने जबरदार और मुहम्मद पार मनसबदार को एक शाही फरमान देकर दिल्ली भेजा जिसमे गुरु गोबिन्द सिंह जी को किसी भी प्रकार का कष्ट न देने तथा सम्मानपूर्वक लाने का आदेश था।

इधर गुरु गोबिन्द सिंह जी स्वयं दक्षिण भारत की और चल पड़े। यात्रा के बीच में ही 20 फरवरी 1707 को उन्हें अहमदनगर में औरंगजेब की मृत्यु का समाचार मिला उनकी औरंगजेब से भेंट न हो सकी।

मित्तर प्यारे नू:-

इसके रचनाकार भी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी हैं। इस प्रकार की रचना से उनके व्यक्तित्व की समृद्धि की झलक मिलती है। उनकी आध्यात्मिकता और वीरता के बारे में बात करना सूरज को दिया दिखाने के बराबर है। उनकी विभिन्न रचनाओं में पंजाबी, संस्कृत व् फारसी का उपयोग हुआ है यह रचना भी उनकी साहीतियक क्षमताओं का एक अलग आयाम प्रदर्शित

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

करती है । प्रख्यात गजल गायक जगजीत सिंह ने तो इसी नाम की अपने एलबम में तीन अलग - 2 तरह से इसे गया है ।

मित्तर प्यारे नू
हाल मुरीदा दा कहणा
तुध बिन रोग रजाइयाँ दा ओडन
नाम निवासां दे रहणा
सूल सुराही, ख़न्जर प्याला,
बिग कसाईयाँ दा सहणा
यारडे दा सांनूं सथर चंगा
भटट खेडेया दा रहणा ।

उनकी साहीतियक क्षमताओं का प्राय: उतनी गहनता से विवेचन नहीं हुआ और एक रचनाकार के रूप में विभिन्न भाषाओँ पार उनकी सहज पकड़ थी । कई - 2 जगह तो उन्होंने एक ही जगह सब भाषाओँ का भी प्रयोग किया है ।

इस शब्द में वे परमेश्वर से अपने दुख्खो की चर्चा करते हुए प्रतीत होते है जो कि अवतारी पुरषो के जीवन में एक विसंगति जैसा लगता है किन्तु कई अन्य उदाहरण भी है जैसे कि रामायण में राम का सीता के लिये विलाप करना, यीशु मसीह द्धारा सूली लगने से पहले परमेश्वर से शिकायत करना इत्यादि

गुरु गोबिन्द सिंह जी के अनमोल विचार:-

1. गुरु गोबिन्द सिंह जी के अनुसार - अगर आप केवल भविष्य के बारे में सोचते रहेंगे तो वर्तमान भी खो देंगे।
2. जब आप अन्दर से अहंकार मिटा देंगे तभी आपको वास्तविक शांति प्राप्त होगी ।
3. ईश्वर ने हमें जन्म दिया है ताकि हम संसार में अच्छे काम करें और बुराई को दूर करें ।
4. इंसान से प्रेम ही ईश्वर कि सच्ची भक्ति है ।
5. अच्छे कर्मो से ही आप ईश्वर को पा सकते है अच्छे कर्म करने वालो की ही ईश्वर मदद करता है ।
6. गुरु गोबिन्द सिंह जी के अनुसार – मुझे भगवान का सेवक मानो, मुझे भगवान मत कहो और इसमें कोई संदेह मत रखो ।
7. जब बाकी सभी तरीके विफल हो जाए तो हाथ में तलवार उठा लो ।
8. असहायों पर अपनी तलवार चलाने के लिये उतावले मत हो, अन्यथा विधाता तुम्हारा खून बहायेगा ।
9. उसने हमेशा अपने अनुयायियों का साथ दिया है और हर समय उनकी मदद की है ।
10. हे ईश्वर मुझे आशीर्वाद दें कि में कभी अच्छे कर्म करने में संकोच न करू ।
11. सबने महान सुख और स्थायी शांति तब प्राप्त होती है जब कोई अपने भीतर के स्वार्थ को समाप्त कर देता है ।
12. दिन रात हमेशा ईश्वर का ध्यान करो ।
13. हर कोई उस सच्चे गुरु की जय जयकार और प्रशंशा करे जो हमें भगवान की भक्ति के खजाने तक ले गया है ।

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 "14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

14. भगवान के नाम के अलावा कोई मित्र नहीं है भगवान के विनम्र सेवक इसी का चिंतन करते और इसी को देखते है ।
15. सच्चे गुरु की सेवा करते हुए स्थायी शांति प्राप्त होगी, जन्म और मृत्यु के कष्ट मिट जायेंगे।
16. ईश्वर स्वयं शमाकर्ता है ।
17. बिना नाम के कोई शांति नहीं है ।
18. मृत्यु के शहर में उन्हें बांध कर पीटा जाता है और कोई उनकी प्रार्थना नहीं सुनता है ।
19. जो लोग भगवान के नाम पर ध्यान करते है वे सभी शांति और सुख प्राप्त करते है ।
20. मै उस गुरु के लिए न्योछावर हूँ जो भगवान के उपदेशो का पाठ करता है ।
21. सेवक नानक भगवान के दास है अपनी कृपा से भगवान उनका सम्मान सुरक्षित रखते है ।
22. स्वार्थ ही अशुभ संकल्पों को जन्म देता है ।
23. गुरु गोबिंद जी के अनमोल विचार आज भी जोश और ऊर्जा का संचार करते है।

"सवा लाख से एक लडाऊ
चिड़ियन ते मै बाज लडाऊ
तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊ"

संदर्भः

1. BBC History of Sikhism, The Khalsa". Sikh world history. BBC Religion & Ethics. 29 August 2003
2. Singh, Patwant (2000). The Sikhs. Knopf.
3. Pashaura Singh (2005), Understanding the Martyrdom of Guru Arjan, Journal of Punjab Studies, 12 (1), Pages 29-62
4. McLeod, Hew (1987). "Sikhs and Muslims in the Punjab". South Asia: Journal of South Asian Studies
5. Lafont, Jean-Marie (16 May 2002). Maharaja Ranjit Singh: Lord of the Five Rivers (French Sources of Indian History Sources). USA: Oxford University Press.
6. दैनिक भास्कर धर्म डेस्क, उज्जैन, 29 दिसम्बर 2010
7. लाल कृष्ण सी यादव (सांपल) इतिहास में हरियाणा अध्ययन और संस्कृति
8. कुरुक्षेत्र, संस्करण-1968
9. एस.आर. फोगाट- इतिहास और संस्कृति हरियाणा, दिल्ली
10. संस्करण-1985
11. गोपाल सिंह, सिक्ख जनों का इतिहास, दिल्ली, संस्करण-1995
12. जे.एस. ग्रेवाल, पंजाब के सिक्ख, दिल्ली, संस्करण-1994
13. जे.डी. कनिंघम, सिक्खों का इतिहास, दिल्ली, संस्करण-1955
14. डब्ल्यू.एच. मैकाल्ड, गुरु नानक एवं सिक्ख धर्म, ऑक्सफोर्ड,
15. संस्करण-1968
16. पूरण सिंह, दा टाइन मास्टर, इलाहाबाद, संस्करण-1950
17. पी.एन. चोपड़ा, बी.एन. पुरी एवं एस.एन. दास, ए.सी प्रधान—एक नया अग्रिम
18. इतिहास, संस्करण-1996
19. एस.आर. फोगाट, हरियाणा का इतिहास एवं संस्कृति : एक वर्गीकृत और
20. एनोटेसिड बिबलियोग्राफी, कुरुक्षेत्र संस्करण-1979
21. फौजा सिंह, पंजाब का इतिहास, पटियाला,

Journal of Current Science
UGC Approved Journal No.64664
Available Online: https://journal.scienceacad.com
Vol 20, No 01, January 2019 “14th-Conference"(IC-GAEMPSH) ISSN No.- 9726-001X

संस्करण-1972

22. बुद्ध प्रकाश, हरियाणा की झलक, कुरुक्षेत्र, संस्करण-1967